हारिए न हिम्मत बिसारिए न राम

जुही

बुनकर चमेली

लालीपुर एक छोटा सा गांव था। गांव के लोग कपड़ा बुनने का काम करते थे। सेठों से सूत लाते। बुनकर कपड़ा लौटा देते। कपड़े के बदले सेठ उन्हें मजदूरी के पैसे दे देते। पर पैसे बहुत कम होते थे। इतने कम पैसों में घर का खर्चा चलाना मुश्किल था। पर लोग करते भी तो क्या?

चमेली का परिवार भी इसी काम में लगा था। पति कपड़ा बुनता। चमेली और उसकी बेटी मदद करते। जैसे-तैसे आधे पेट चलाकर जिंदगी गुजार रहे थे।

अचानक एक दिन चमेली का पति बीमार पड़ गया। उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। वैद्यजी आए। मुआयना किया। पति काफी कमज़ोर हो गया था। सांस फूला था। वैद्यजी ने बताया,, इसको सांस की बीमारी हो गई है। दमा कहते हैं। कपड़ा बुनते समय मुंह ढककर रखा जाना चाहिए। सूत के रोएं सांस के साथ अंदर जाते हैं। मैं दवा दे रहा हूं। पर ठीक होने में दो-तीन महीने लग जाएंगे। ज्यादा कमजोरी हो गई तो टी.बी. होने का डर है।

चमेली सन्नाटे में आ गई। सोचने लगी, अब क्या होगा? ये काम नहीं करेंगे तो हम खाएंगे क्या? दवा-इलाज का खर्चा कहां से आएगा।

फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। अपनी सहेली रजिया के पास गई। सब हालात बताए। रजिया ने कहा, "तुम कपड़ा क्यों नहीं बुनतीं?"

"मुझे तो बुनना आता ही नहीं।"

रजिया ने बताया, "यहां से दो मील की दूरी पर गांव की सरहद के पास, महिला सहकारी समिति है। समिति यही काम करवाती है। उसकी सदस्या बन जाओ। वहां तुम बुनाई सीख लोगी। फिर वहीं से सूत लेना। कपड़ा बुनकर उनको ही देना। अच्छा मेहनताना मिलेगा। मैंने भी वहीं काम सीखा और अपने पैरों पर खड़ी हुई।"

चमेली अपनी बेटी को साथ लेकर सहकारी समिति गई। वहां दोनों ने बुनाई सीखी। फिर वहीं से सूत लेकर काम शुरू किया। मेहनत से घर चल निकला। पति की दवा-दारू हुई। परिवार की आमदनी बढ़ी। और चमेली के हौसले को देख गांव की दूसरी औरतों ने भी समिति में काम सीखने का इरादा किया।

धोकिया ने सब्जी की दुकान लगाई

धोकिया अपने पति और दो बच्चों के साथ हंसी-खुशी रहती थी। खेती का काम था। एक दिन सांप के काटने से पति गुजर गया। धोकिया पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। क्या करे? कहां

जाए? बच्चों को क्या खिलाए? इसी तरह दो महीने बीत गए। घर में जो रहा सहा था खत्म हो गया।

एक दिन उसे खबर मिली। गांव में महिला जागृति शिविर लग रहा है। उसमें औरतों के रोजगार के बारे में बात होगी। धोकिया भी शिविर में गई। वहां पता चला कि सरकार छोटे-छोटे काम-धंधे के लिए बिना ब्याज रुपए उधार देती है। यह उधार दस रुपए हर हफ्ते के रूप में वापस लिया जाता है।

धोकिया होशियार थी। गांव की कार्यकर्ता की मदद से अपने 'ग्राम्य योजना' से 500 रुपए उधार लिए। इस पैसे से सब्जी की एक दुकान लगाई। तराजू-बाट खरीदे। दुकान चल निकली।

उसके बच्चे स्कूल जाने लगे। लौटकर मां का हाथ बंटाते। धोकिया ने धीरे-धीरे कर्जा वापस कर दिया। आज उसका परिवार खुशहाल है।

केसर ने यूनियन बनाई

केसर के घर आज औरतों की बैठक है। ये औरतें रोजगार के लिए बीड़ी बनाती हैं। सारा दिन बीड़ी बनाने से भी बहुत कम पैसे मिलते हैं। सेहत भी खराब रहती है। इसलिए औरतों ने मिलकर एक रणनीति तैयार करने का इरादा किया है।

केसर ने कहना शुरू किया। "सारे दिन के काम के दस-बारह रुपए मिलते हैं। कई दिनों से सांस लेने में तकलीफ भी हो रही है। पर डाक्टर के पास जाने का मतलब है सौ रुपए ठंडे। मास्टर जी बता रहे थे आठ घंटे काम की मजदूरी कम से कम 33 रुपए है।"

सत्तो बोली, "ठेकेदार को मजदूरी बढ़ाने को कहो तो वह नौकरी से निकालने की धमकी देता है।"

केसर बोली, "ऐसा तब होगा जब हम अकेले ठेकेदार के पास जाएंगी। एका करें, फिर चलें तो हमें नहीं निकाल पाएगा।"

दूसरे दिन सब एक साथ ठेकेदार के पास गईं। उसने सबको साथ देखा तो डर गया। औरतों ने कहा, "हमें कुटी-कुटाई तंबाकू मिलनी चाहिए। कूटने से गर्द हमारे फेफड़ों में भर जाती है। बीड़ी बनाते समय मुंह पर बांधने को साफ पतला कपड़ा देना होगा। आठ घंटे काम के लिए कम से कम तैंतीस रुपए देने होंगे।"

ठेकेदार ने सब औरतों को एक साथ अपनी मांग रखते देखा तो वह समझ गया। इनकी मांग मानने में ही भलाई है। यूनियन को तोड़ना आसान नहीं है। □

चमेली, धोकिया और केसर, इन तीनों बहनों ने अपनी हिम्मत और लगन से एक मिसाल कायम की। साथ ही अपने जीवन को मायूसी से जीने की जगह, अपनी स्थिति को हीन समझ समझौता करने के बजाय, अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश की। एक दूसरे की मदद की, संगठित होकर अन्यायी का सामना किया। सीधी-सादी अनपढ़ औरतों ने यह साबित कर दिया कि अगर औरत एक बार कुछ ठान ले तो उसे कोई डिगा नहीं सकता।

इनसे प्रेरणा लेकर अगर हम सभी हिम्मत न हारकर, दुख, परेशानी का सामना लगन और निष्ठा से करेंगी तो कुछ भी असंभव नहीं है। इन औरतों ने कहीं न कहीं से सहारा पाया। इस प्रकार हम भी एक दूसरे को सहारा दें। आसपास ऐसे रिश्तों को मजबूत बनाएं। और जीवन को संवारें।